मधुबन ओम् शान्ति अंक 353 दिसम्बर 2021

पत्र-पुष्प

"हर कर्म करते समय निर्लिप्त, न्यारे प्यारे कर्मयोगी बन कर्म करो तो कर्मातीत स्थिति सहज बन जायेगी" दादी जी की शुभ प्रेरणायें (19-11-21)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा खुशी की खुराक खाने और खिलाने वाले, सर्व खजानों से सम्पन्न, विशेष संगमयुग के समय के खजाने को सफल करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस बार तो अव्यक्त रूपधारी प्यार के सागर मीठे बाबा की मधुर मुस्कराती हुई प्यारी मूर्त देख सभी अति हर्षित हो, प्यारे बापदादा से सदा खुश रहने और खुशी बांटने की प्रामिस करते हुए खूब रिफ्रेश होकर गये। यह न्यारा प्यारा अलौकिक मिलन भी सभी में कितनी शक्ति भर देता है। बाबा ने भी सभी से दोनों हाथ उठवाते हुए वायदे कराये और यही विशेष प्रेरणा दी कि अब खुद भी निर्विघ्न रहना है और दूसरों को भी निर्विघ्न बनाना है। सदा खुशी में रहना है और खुशी बांटनी है। संगम के अमूल्य समय के खजाने को सफल करना है। अपने चेहरे द्वारा सर्व खजानों की चमक दिखानी है। ऐसा ऑनलाइन अलौकिक मिलन भी सबको भरपूर कर देता है।

अभी तो हम सबको ज्ञान सुनने सुनाने के साथ ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने का विशेष अभ्यास करना है। जैसे साकार जीवन में ब्रह्मा बाबा ने कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने का अभ्यास किया। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे प्यारे बन सेवा की। ऐसे बाबा कहते बच्चे सेवा का विस्तार भले कितना भी बढ़ता जाए लेकिन विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो। यही स्थिति कर्मातीत बना देगी। अब साक्षी हो पार्ट बजाते सदा साथी के साथ का अनुभव करते रहो।

बाबा कहते बच्चे, अब आवाज में आते आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो, तब सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति बनेंगी। कार्य व्यवहार करते बीच-बीच में एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होंगे तो उसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी रहेगा। बोलो, ऐसा ही अटेन्शन रख विशेष याद और सेवा में तत्पर रहते हो ना!

अभी तो मधुबन में बाबा के बच्चों की अच्छी रिमझिम है, सब तरफ योग भट्ठियों के बहुत अच्छे कार्यक्रम चल रहे हैं। एक ओर बाबा मिलन की यह सीज़न, साथ-साथ सभी स्थानों पर बाबा के बच्चों के लिए तपस्या के कार्यक्रम, यह भी बाबा बच्चों को अन्तिम समय के लिए जैसे तैयार कर रहा है। सभी बाबा के बच्चे अपने मन को शक्तिशाली समर्थ बनाए, देह और दुनिया की आकर्षण से उपराम रह, साकारी सो आकारी सो निराकारी स्थिति की ड्रिल करते रहें, इसी अभ्यास से स्व-स्थिति शक्तिशाली बनेंगी और अनेक प्रकार की परिस्थितियों पर सहज विजय हो जायेगी। तो अभी संगठित रूप में इसका अभ्यास करना है। अच्छा - आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

दिसम्बर 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

(अ) अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

1) जैसे जोर-शोर की सेवा द्वारा सम्पूर्ण समाप्ति के समय को समीप ला रहे हो, ऐसे अब स्वयं को सम्पन्न बनाने का भी प्लैन बनाओ। अब धुन लगाओ कि कुछ भी हो जाए कर्मातीत बनना ही है। इसकी डेट अब फिक्स करो।

2) कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे - इसको कहते हैं कर्मातीत। कर्मयोग की स्थिति कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराती है। यह कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी स्थिति है, इससे कोई कितना भी बड़ा कार्य, मेहनत का हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं।

3) कर्मातीत का अर्थ ही है - सर्व प्रकार के हद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा। हद है बन्धन, बेहद है निर्बन्धन। ब्रह्मा बाप समान अब हद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मातीत होने का अव्यक्ति दिवस मनाओ, इसी को ही स्नेह का सबूत कहा जाता है।

4) कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करने के लिए सदा साक्षी बन कार्य करो। साक्षी अर्थात् सदा न्यारी और प्यारी स्थिति में रह कर्म करने वाली अलौकिक आत्मा हूँ, अलौकिक अनुभूति करने वाली, अलौकिक जीवन, श्रेष्ठ जीवन वाली आत्मा हूँ - यह नशा रहे। कर्म करते यही अभ्यास बढ़ाते रहो तो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेंगे।

5) कर्मातीत बनने के लिए अशरीरी बनने का अभ्यास बढ़ाओ। शरीर का बंधन, कर्म का बंधन, व्यक्तियों का बंधन, वैभवों का बंधन, स्वभाव-संस्कारों का बंधन...कोई भी बंधन अपने तरफ आकर्षित न करे। यह बंधन ही आत्मा को टाइट कर देता है। इसके लिए सदा निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे बनने का अभ्यास करो।

6) कर्मातीत बनने के लिए कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त बनो। सेवा में भी सेवा के बंधन में बंधने वाले सेवाधारी नहीं। बन्धनमुक्त बन सेवा करो अर्थात् हद की रॉयल इच्छाओं से मुक्त बनो। जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ - यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

7) बहुतकाल अचल-अडोल, निर्विघ्न, निर्बन्धन, निर्विकल्प, निर-विकर्म अर्थात् निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी स्थिति में रहो तब कर्मातीत बन सकेंगे।

8) कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने के लिए ज्ञान सुनने सुनाने के साथ अब ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन दो। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की, ऐसे फालो फादर करो।

9) सेवा का विस्तार भल कितना भी बढ़ाओ लेकिन विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो।

10) कर्मातीत अर्थात् कर्म के किसी भी बंधन के स्पर्श से न्यारे। ऐसा ही अनुभव बढ़ता रहे। कोई भी कार्य स्पर्श न करे और करने के बाद जो रिजल्ट निकलती है उसका भी स्पर्श न हो, बिल्कुल ही न्यारापन अनुभव होता रहे। जैसेकि दूसरे कोई ने कराया और मैंने किया। निमित्त बनने में भी न्यारापन अनुभव हो। जो कुछ बीता, फुलस्टाप लगाकर न्यारे बन जाओ।

11) कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन। कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। जितना ही कार्य बढ़ता जाये उतना ही हल्कापन भी बढ़ता जाये। कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे लेकिन मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं - यह अभ्यास बढ़ाओ तो सम्पन्न कर्मातीत सहज ही बन जायेंगे।

12) कर्मातीत बनने के लिए चेक करो कहाँ तक कर्मों के बन्धन से न्यारे बने हैं? लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त कहाँ तक बने हैं?

13) जब कर्मों के हिसाब-किताब वा किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के वश होने से मुक्त बनेंगे तब कर्मातीत स्थिति को प्राप्त

कर सकेंगे। कोई भी सेवा, संगठन, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग न करे। इस बंधन से भी मुक्त रहना ही कर्मातीत स्थिति की समीपता है।

14) पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में न लाये। स्व-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन, शुभचिन्तक बनने का चिन्तन ही चले तब कहेंगे कर्मातीत स्थिति।

15) कर्मातीत अर्थात् कर्म के वश होने वाला नहीं लेकिन मालिक बन, अथॉरिटी बन कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराये। आत्मा मालिक को कर्म अपने अधीन न करे लेकिन अधिकारी बन कर्म कराता रहे। कराने वाला बन कर्म कराना - इसको कहेंगे कर्म के सम्बन्ध में आना। कर्मातीत आत्मा सम्बन्ध में आती है, बन्धन में नहीं।

16) पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन हिसाब चुक्तू करावे। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तू करना - यह है कर्मातीत स्थिति की निशानी।

(ब) कर्मयोगी के साथ कर्मातीत स्थिति का अनुभव करो

17) किसी भी प्रकार का देह का, सम्बन्ध का, वैभवों का बन्धन अपनी ओर आकर्षित न करे, ऐसे स्वतन्त्र बनो इसको ही कहा जाता है – बाप-समान कर्मातीत स्थिति। प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज।

18) जैसे आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचता समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में स्थित हो जाओ। जब सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे तब कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा।

19) जैसे देखना, सुनना, सुनाना – ये विशेष कर्म सहज अभ्यास में आ गया है, ऐसे ही कर्मातीत बनने की स्टेज अर्थात् कर्म को समेटने की शक्ति से अकर्मी अर्थात् कर्मातीत बन जाओ। एक है कर्म-अधीन स्टेज, दूसरी है कर्मातीत अर्थात् कर्म-अधिकारी स्टेज। तो चेक करो मुझ कर्मेन्द्रिय-जीत, स्वराज्यधारी राजाओं की राज्य कारोबार ठीक चल रही है?

20) हर ब्राहमण बाप-समान चैतन्य चित्र बनो, लाइट और माइट हाउस की झाँकी बनो। संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार करो और कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाओ तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। फिर सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्तव्य कराना होगा वहाँ वायरलेस द्वारा डायरेक्शन दे सकेंगे। सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से संकल्प किया और जहाँ चाहें वहाँ वह संकल्प पहुंच जाए।

21) महारथियों का पुरुषार्थ अभी विशेष इसी अभ्यास का है। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। एक स्थान पर खड़े होते भी चारों ओर संकल्प की सिद्धि द्वारा सेवा में सहयोगी बन जाओ।

22) जैसे साकार में आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है, वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो। अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका अनुभव सहज होता जाए। सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत।

23) जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए। कर्म भी करो और याद में भी रहो। जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं। जब चाहे कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे बन जायें।

24) जैसे साकार में देखा लास्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बैलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही। ऐसे फालो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है। अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा।

25) जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है-''मेरा बाबा''। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो। हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है - बाप समान, कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन।

26) अब सेवा के कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से कर्मातीत। तो कर्मातीत बनना है और ''यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,'' यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर लाना है।

27) अपनी हर कर्मेन्द्रिय की शक्ति को इशारा करो तो इशारे से ही जैसे चाहो वैसे चला सको। ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब फिर प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे। हर कर्मेन्द्रिय ''जी हजूर'' ''जी हाज़िर'' करती हुई चले। आप राज्य अधिकारियों का सदा स्वागत अर्थात् सलाम करती रहे तब कर्मातीत बन सकेंगे।

28) जब कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचेंगे तब किसी भी आत्मा तरफ बुद्धि का झुकाव, कर्म का बंधन नहीं बनायेगा। आत्मा का आत्मा से लेन-देन का हिसाब भी नहीं बनेगा। वे कर्म के बन्धनों का भी त्याग कर देंगी।

29) अन्त:वाहक स्थिति अर्थात् कर्मबन्धन मुक्त कर्मातीत स्थिति का वाहन अर्थात् अन्तिम वाहन, जिस द्वारा ही सेकण्ड में साथ में उड़ेंगे। इसके लिए सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी, सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो तब ही अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी स्वरूप बनेंगे।

30) आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति बन जायेगी। एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होंगे तो इसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति अनुभव करेंगे। इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है।

31) कर्मातीत स्थिति को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति धारण करना आवश्यक है। कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती है, तो इस अनुभूति को बढ़ाओ।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"सदा खुशी में रहना है तो बीती को बीती करके बिन्दी लगा दो, अपने भाग्य का सिमरण करो"

(गुल्जार दादी जी 17-02-06)

हरेक के मस्तक में भाग्य का सितारा चमक रहा है क्योंकि कोई महात्मा या ज्योतिषि, कोई धर्मात्मा ने हमारा भाग्य नहीं बनाया है, स्वयं भगवान ने हमारा भाग्य बनाया है। उसने हमें अपना बना लिया है, जिसको भगवान अपना बनाये या भगवान के हम बन जायें, उनकी नज़र हमारे ऊपर पड़ जाये, यह कभी कोई ने सोचा था क्या! भगवान को हम ही पसन्द आयेंगे, यह तो पता नहीं था लेकिन अभी पता पड़ा कि भगवान ने हमको पसन्द किया है। भगवान के मुख से निकला है कि यह मेरी विशेष आत्मायें हैं। आपने भगवान को पहचान लिया, यह सबसे बड़ी विशेषता है। सिर्फ पहचाना ही नहीं लेकिन अधिकार से कहते हो कि ''मेरा बाबा''। हरेक को यह निश्चय है कि मेरे लिए ही बाबा आया है। तो बाबा कहते हैं यह विशेषता न साइंस वालों में है, न कोई वी.आई.पीज... में है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ, यह प्रभू की पढ़ाई हम भगवान की यूनिवर्सिटी में भगवान से पढ़ रहे हैं। तो यह रूहानी नशा होना चाहिए, खुश रहना चाहिए। अभी खुशी गायब नहीं होना चाहिए क्योंकि खुशी से मुस्कराता हुआ चेहरा सबको अच्छा लगता है।

पहले की सब बातों को भूल करके किसी को भी मिलना है तो मुस्करा करके ही मिलना है। दूसरा, मीठे बोल का शरबत बनाके पिलाना है। तीसरा, दिलखुश होके मिलो तो दिलखुश मिठाई खिलाना हो जायेगा क्योंकि बाबा को मुस्कराता हुआ, खुशी का चेहरा अच्छा लगता है। तो हम सभी बच्चों को बाबा ने दिलतख्त पर बिठा करके कितना दिलखुश किया है, खुशी की खुराक खिलाया है। तो हमारी अविनाशी खुशी की यह गिफ्ट कोई लेके न जाये, यह ध्यान रखो। बीती सो बीती करके बिन्दी लगाते जाओ तो खुश रहेंगे। ब्राह्मण जीवन की लाइफ और खुशी

नहीं है, तो क्या कहेंगे? इसलिए हमारी खुशी न जाये, इसके लिए पहले अपने संकल्प को चेक करो फिर सोचो कि ऐसे करना है, ऐसे नहीं करना है। मतलब किसी बात के लिए भी क्यों... कहा माना वेस्ट थॉट का गेट खोल दिया इसलिए कुछ भी करते हो तो पहले सोचो, फिर करो। कितनी भी जल्दी हो या कितने भी बिजी हो पर मुरली सुनके या पढ़के उससे शुभ संकल्पों का स्टॉक जमा करो तो अपने को कन्ट्रोल कर सकेंगे। फिर भी कलियुग के प्रभाव के कारण वेस्ट थॉट का प्रभाव तो अपना काम करेगा जरुर, लेकिन फिर भी मुरली की कोई भी एक प्वाईन्ट अगर बुद्धि में आ जायेगी उसके ऊपर सोचेंगे, एक होता है सिर्फ रिपीट करना, दूसरा होता है उसके स्वरूप में टिक करके उसको प्रैक्टिकल में लाना, तो वो खाली जगह भर जायेगी फिर व्यर्थ खत्म हो जायेगा। तो कईयों के बुरे संकल्प तो खत्म होते पर व्यर्थ संकल्प चलते रहते हैं इसीलिए बाबा ने अभी होमवर्क दिया है कि व्यर्थ संकल्पों को खत्म करो। यहाँ मधुबन के वातावरण में आ करके, टाइम पास न करके पुरुषार्थ में अपना समय सफल करना है। यहाँ का पुरुषार्थ वहाँ काम आयेगा। सोचेंगे, देखेंगे, करेंगे... यह गीत नहीं गाना। जितना भी चांस मिला है उसका पूरा लाभ लेके जाना, भाग्य नहीं छोड़ना। मधुबन में आते हो तो मधुबन को ही देखो, मधुबन की ही बातें करो, तो वहाँ जाने के बाद ऐसी कोई परिस्थिति आती है तो उस समय मधुबन की यह घड़ियां याद करके यहाँ पहुँच जाओ बिना टिकट के, तो आपको बहुत मदद मिलेगी।

"विकारों के वशीभूत होकर किया गया कर्म ही कर्मबन्धन है, ऐसा कोई कर्म ना हो जो अन्दर ही अन्दर दिल खाता रहे"

(दादी जानकी जी 17-02-06)

हम सबके दिल से क्या निकलता है? मेरा बाबा, शुक्रिया बाबा। बाबा हमको कितना प्यार करता है, तो हम शुक्रिया किन शब्दों में बोलें। हर पल, हर सेकेण्ड, हर घड़ी बाबा अपनी याद दिलाता है। देखो, तुम कौन हो, किसके हो, क्या कर रहे हो, क्या करने का है? बाबा ने इतनी सारी रोशनी दी है। ऑख खुल गई है। तो अपने को देखो, बाप को देखो और समय को देखो। इतनी समझ आने के बाद जो कुछ किया है, जो कुछ हो गया है, उसको याद नहीं करो, पास्ट इज़ पास्ट। बाबा ने यह बहुत सहज विधि बताई है। नहीं तो जो कुछ हो जाता है वो भूलता नहीं है। कोई गलत काम जिन्हों के साथ होता है, वह भी भूल नहीं सकते हैं। तो जब तक खुद को माफ नहीं किया है या औरों को माफ नहीं किया है तब तक भूल नहीं सकता है। बाबा को सामने रखते खुद के लिए माफी मांग लो। उसके बाद ऐसा कोई काम नहीं करो जो फिर से भूलने की प्रैक्टिस करना पड़े।

अभी बाबा ने ऐसी समझ दी है कि तुमने किसी के साथ कुछ गलत किया है तो उससे माफी ले लो। अगर किसी ने तेरे से किया है तो उसे माफ कर दो, भूल जाओ। जब तक मन में कुछ खाता है तो बाबा को याद करने से शान्ति नहीं मिल सकती। वह शान्ति से बाबा को याद भी नहीं कर सकता। भले कितना भी योग लगाता रहे, इसलिए भगवान कहता है बीती को भूल जा, वो भुलवाता है और हम याद करें, यह समझदारी नहीं है। जो पहले करते थे वो अब नहीं करना है। विकारी बन्धन के वशीभूत होकर कुछ भी नहीं करना है, नहीं तो विकारी कर्मबन्धन हो जायेगा। छोटा-सा भी विकार, थोड़े से लोभ, मोह वश कोई भी कर्म किया तो हिसाब-किताब बन जाता है। पहले वाले चुक्तू ही नहीं किये, अभी फिर यह नये बना दिये तो भारी हो जायेंगे। ऐसा कोई कर्म न हो जो घड़ी-घड़ी अन्दर ख्याल आये। क्या करें, ऐसे कहके कर लेते हैं। अभी व्यर्थ की एकदम समाप्ति हो जाये। वैसे याद से हल्के बनते हैं, हल्के बनते हैं तो याद अच्छी रहती है। इसके लिए बाबा कहते जो मैं कहता हूँ वही करो, वही सोचो। फिर उसकी कमाल होगी। कभी चलायमान, डोलायमान नहीं होना क्योंकि बाबा की जो शिक्षायें हैं वो न सिर्फ हमने कानों द्वारा सुनी हैं, बुद्धि द्वारा समझी है, पर दिल को ऐसी लग गई हैं, जो हमारे संकल्पों में चली गई हैं।

शिवबाबा है विदेही और साकार ब्रह्माबाबा हो गया अव्यक्त, अभी दोनों बाबा ऊपर रहने वाले हो गये। एक निराकारी दुनिया में, दूसरा अव्यक्त वतन में रहने वाला दोनों आपस में इकट्ठे हो गये हैं। तो हम फिर यहाँ दोनों के बीच में घुस जायें तो साथ चलना आसान हो जायेगा। साकारी दुनिया में ही लिप्त होंगे तो हम तीन लोक के मालिक, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ हैं, यह

भूल जायेगा। तो संकल्प को चेक करना कि मैं त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हूँ, तीनों लोकों में सैर करने वाली मैं आत्मा हूँ? सैर करने से हल्के हो जाते हैं। पहले ऐसे चक्र में पार्ट बजाया, अभी चक्र पुरा हो गया इसलिए ऊपर सैर करो। चेक करो कि मेरे संकल्पों में क्या है? क्योंकि अभी जो प्रैक्टिस की हुई होगी, अन्त मते सो गति वही होगी। अभी अन्दर अपने आप फील हो कि अगर आज शरीर छूटे तो मेरी गति क्या होगी? इसमें व्यक्तिगत हरेक अपने को देखे। संकल्प द्वारा यह भी पता चलता है कि 100 परसेन्ट प्यूरिटी है? संकल्पों में शुद्धि और श्रेष्ठता हो तो दृष्टि भी ऐसी होगी। किसके लिए न द्वेष, न ईर्ष्या...। अच्छी भावना वाला संकल्प हो क्योंकि हमें सद्‌गति दाता मिला है तो हमारे भाणे औरों का भी भला हो रहा है। कोई बुरा है तो और ही रहमदिल बनके सहयोग दो।

संकल्प में भी नष्टोमोहा बनना है, संकल्प में भी कोई से मोह न हो। तो कितनी ऊंची मंजिल है। कोई अपनी इच्छाओं में, अपने विचारों में अटैचमेन्ट न हो। किसकी अच्छाई वा बुराई में भी न हो। तो आत्मा में जो सूक्ष्म किचड़ा भर गया है, अभी उसको बड़ी सूक्ष्मता से सफाई करना है, तब ही सूक्ष्म में सच्चाई की शक्ति पैदा होगी। चलन और चेहरा भले अपने आपको दिखाई दे या न दे लेकिन सबको दिखाई पड़ता है। स्वप्नों से भी पता चलता है, मेरा संकल्प किस क्वालिटी का है? सच्ची भावना का भाड़ा मिलता है। एक बल एक भरोसा, निश्चय में विजय। अपने अन्दर देखो कि मैं कौन हूँ, किसकी हूँ, दिल आपेही बताती है। अच्छा।

दूसरा क्लास

हर दिन का अपना महत्व है। सोमवार है शिवबाबा का दिन, मंगलवार है मंगलम् भगवान विष्णु का दिन, बुद्धवार मम्मा का दिन है, गुरूवार तो है ही सतगुरू बाबा का दिन, शुक्रवार है शुक्रिया बाबा, शनिचर है दे दान छूटे ग्रहण और सण्डे ज्ञान सूर्य बाबा और हम बच्चों का दिन। तो एक-एक दिन एक-एक घड़ी का कितना अच्छा महत्व है।

हम जहाँ भी रहें, स्थिति ऐसी रहे जो बाबा के सिवाए कोई नज़र न आये। जो दिल में है वही दृष्टि में है। ऐसे मीठे प्यारे बाबा ने हर घड़ी, हर सेकण्ड सफल करना सिखाया है। एक घड़ी, आधी घड़ी बाबा को याद करो। फिर कहता है हर घड़ी याद करो, बाबा छोड़ता नहीं है। पहले तो हजारों को याद करते थे, अभी न अंकल, न अण्टी, माँ बाप को भी समझने लगे, यह तो बाबा के बच्चे बहन भाई हैं। सब सम्बन्धों को समेट के भाई-भाई की और बहन भाई की दृष्टि बन गई। यहाँ टीचर भी एक है, ऐसे नहीं जितनी सबजेक्ट उतने टीचर। नहीं। इतनी बड़ी मनुष्य से देवता बनाने की पढ़ाई एक बाबा ही पढ़ाता है। पहले तो हमें शूद्र से ब्राह्मण बनाया। अभी बाबा हमें अति सूक्ष्म में लेके जा रहा है। कहता है लाइट रहो, माइट लो। लाइट हाउस बनके काम करो। सेवा में या सम्बन्ध में भारीपन आया, लाइट न रहे। माइट भी नहीं खींची तो क्या हाल होगा! देह ने खींचा या सम्बन्ध ने खींचा या किसके स्वभाव ने खींचा या कोई मेरा संस्कार ऐसा हो गया तो कहाँ जायेंगे? न रहेंगे देव, न रहेंगे ब्राह्मण तो कहाँ जायेंगे? युद्ध ही करते रहेंगे, विघ्न आते रहें और विघ्नों का सामना करते रहो, कब तक? तब तक तो विनाश आ जायेगा।

ब्रह्माबाबा ऐसे भोला था पर होशियार बहुत था। होशियार माना न किसी को धोखा देना, न धोखे में आना। न दुःख देना, न दुःख लेना। इसमें होशियारी बहुत चाहिए। फिर जैसेकि कुछ नहीं जानता है पर जानता सबकुछ है। जैसे कहता है मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ, पर एक-एक के अन्दर को जानता है। यहाँ से यहाँ तक समझ गया, यह कौन है? तो ऐसी बुद्धि देने वाला हमारा बाबा हमें भी कहता है कि जो मैं नॉलेज दे रहा हूँ वो धारण करो। फट से अपनी बुद्धि नहीं चलाओ।

बाबा गरीब-निवाज़ है, उसे स्थूल पदार्थों वा कोई व्यक्ति के तरफ कोई बात का कुछ भी आकर्षण नहीं है। गरीबों को बाबा डबल सिरताजधारी बना देता है। सुदामा जैसा बड़ा मीठा स्वभाव हो। सखा का प्यार, उसमें थोड़ा भी अभिमान नहीं हो सकता। अगर अभिमान है तो वह भगवान को सखा नहीं बना सकता। खुदा की दोस्ती ही रावण को खत्म कर देगी। अगर खुदा से दोस्ती नहीं है तो रावण छोड़ेगा नहीं। दोनों में एक दो के लिए इतना प्यार हो, जो वो कहे बच्चा ऐसा है उसको देख सब कहें कि इनको ऐसा किसने बनाया, यही बाबा चाहता है।

जब तक देही-अभिमानी स्थिति नहीं है तब तक वो किसी का अभिमान छुड़ा नहीं सकता है। देही-अभिमानी स्थिति में बाबा की याद है, बाबा की याद से देही-अभिमानी स्थिति बनती है। कितना भी कोई कहे मैं तो आत्म-अभिमानी हूँ, मैं आत्मा हूँ... लेकिन जब तक परमात्मा की याद आत्मा में नहीं भरी है, तो किसी प्रकार का भी देह-अभिमान दुःख सुख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति सबमें समान होने नहीं देगा। उसको कहा जाता है गरीब, सबके साथ बहुत मीठा। गरीब में यह खूबी होती है, जो भी उसके घर में आयेगा, अच्छा खाना खाके सन्तुष्ट होके जायेगा। साहूकार तो गरीब को इनवाइट भी नहीं करेंगे। परन्तु गरीब निवाज़ बाबा के बच्चे जो मीठे हैं, प्यारे हैं, सदोरे हैं, वह सदा समझते हैं मैं भाग्यवान हूँ। गरीब माना मीठा, गरीब माना भोला, भोला माना जो भगवान कहे हाँ जी। बाबा जो कुछ है आपका है। बाबा का दिया हुआ ही तो हम खा पी रहे हैं। गरीब

के दिल में कोई भी खोट पाप नहीं होता है, मिक्सचर नहीं होगा। हाँ, हूँ.. समझा तो था, सोचा तो था, विचार तो है… ऐसे बोलने सोचने वाले कभी डबल सिरताज नहीं बन सकते क्योंकि अपने ही विचारों में समय गँवाते हैं। गरीब हैं फ्राख दिल, साहूकार हैं तंग दिल। दिल बड़ी है तो खुश रहेंगे, खुश करेंगे। भगवान को कुछ नहीं चाहिए, पर सच्चा प्यार तो चाहिए ना। मुँह तो न बनावे। इतना अच्छा प्यार करेगा कौन? जितना करता है बाबा हमको। शक्ल से लगता तो है, इसका कोई प्यारा है। जिस बिचारे का कोई प्यारा नहीं होता है, वो डिप्रेशन में चला जाता है। मेरा तो कोई नहीं है, ऐसे रोता रहेगा। वह कहेगा छोड़ दो मुझे। अरे! क्या करेंगे? छोड़के कहाँ जायेंगे? जो न्यारा है सो प्यारा है। तो न्यारे हो करके प्यारे बनो।

आंखों की यह राइट साइड है, यह लेफ्ट साइड है। दोनों आँखों से अच्छी तरह से बरोबर दिखाई दे। दोनों में से कोई एक आँख काम कम करे तो समथिंग राँग है। तो इस्ट और वेस्ट सब समान हैं। जो महावीर बच्चे हैं वो पुल बांधना जानते हैं। रावण का राज्य, लंका को जलाने के लिए, खत्म करने के लिए उनके आगे कोई बन्धन नहीं है। जो खुद बंधन में बंधे हुए हैं वह ब्रिज का काम कैसे करेंगे! उसको महावीर नहीं कहेंगे। तो ऐसा सदोरा, मीठा, सभ्यता वाला सयाना सच्चा बनना है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

अपनी स्व-स्थिति बनाने के लिए अपने पास कुछ युक्तियां रखो

(1996)

1) हम सच्चे बाबा के बच्चे हैं, सच के अन्दर कभी आंच नहीं लाओ तो स्थिति बन जायेगी।

2) आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों-क्यों में अपना माथा गर्म नहीं करो। दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता। शीतल काया वाले योगी बन जाते।

3) मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी। युनिटी भी गंवायेंगे। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो – देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता – देखना इसकी क्या गति होगी। मैं क्यों बुरा सोचूं! अगर मैने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100 गुणा दण्ड मिलेगा क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता उसे क्यों मिला।

4) हमें बाबा ने श्रीमत दी है बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती! अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।

5) पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर है। मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण जरूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन, बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो।

6) ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

7) भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेन्ट.... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेन्ट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों कहती – यह मेरा स्टूडेन्ट तुम्हारे सेन्टर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों में नहीं आओ।

8) हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्मायें अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्मायें आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप का पैगाम देना है।

9) बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है – नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतना ईमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

10) एक तरफ हम नींव हैं दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है – नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है।

11) वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये अभी फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता - तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आपने भी बाबा के रजिस्टर में नाम लिखाया, फार्म भरा अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये। ठेका ले लिया ना! अब निकलेंगे भी तो कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है। भागे तो भागे कहाँ। कोई रास्ता नहीं, लॉक लग गया है। जिसको लॉक लगा वही लक्की है हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं, हमारा लॉक है श्रीमत।

12) बाबा ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी-कभी कहते मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि से स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? उस टाइम मैं पैगम्बर कौन सा संदेश सबको देती? बिगड़ने का या निर्माण करने का? कईयों का मूड एकरस से निकल कर आफ हो जाता। क्या उस समय हमारी सूरत से नव निर्माण का पैगाम निकलेगा? तो चेक करो और अपने को चेंज करो। अच्छा - ओम् शान्ति।